attempts also being made by signs and gestures, if not through the spoken word, to instil into the minds of these inmates a sense of national emergency created by the Chinese aggression...... (*Interruptions*).

Mr. Speaker: The hon. Member offers that service.

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : श्रीमन्, मैं यह जानना चाहता हूं कि चिड़ियाघरों में जानवरों को जो भोजन दिया जाता है, क्या उस के लिए कोई कमेटी वग़ैरह बनाई गई है या कोई एक्सपर्ट वग़ैरह हैं, जिन की राय के मुताबिक उन को भोजन दिया जाता है या चूंकि इमर्जेंसी आ गई है, इसलिए यह सारा परिवर्तन किया जा रहा है ।

डा० राम सुभग सिंह : चिड़ियाघर के जो अधिकारी हैं, वे लोग बराबर इस की देख-रेख करते हैं और एक नैशनल कमेटी भी है, जिस के माननीय प्रश्नकर्ता महोदय भी सदस्य हैं । हम लोग मौके मौके पर संसद्-सदस्यों को भी वहां पर ले जाते हैं । बाहर के डाक्टर भी वहां देखरेख करने के लिए हैं ।

फलों और पशुओं के फार्म

\+

*९६०. { **श्री भक्त दर्शन :** / **श्री भागवत झा आजाद :** }

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री २८ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ६५३ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि ऊंचे स्थानों पर फलों तथा पशुओं के फार्म स्थापित करने के बारे में इस बीच क्या प्रगति हुई है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : जहां तक हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिले के कटौला स्थित जरसी ब्रीडिंग फार्म का सम्बन्ध है, वह फार्म संतोषजनक कार्य कर रहा है । इस फार्म के लगभग १० जरसी बैलों को पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और काश्मीर, उत्तर प्रदेश और आसाम के राज्यों में बांट दिया गया है ताकि पहाड़ी पशु विकास योजना के अन्तर्गत कृत्रिम गर्भाधान के तकनीक द्वारा पहाड़ी पशुओं का विकास किया जा सके । फलों के फार्मों के सम्बन्ध में तो वही स्थिति है जो २८ अगस्त, १९६२ के तारांकित प्रश्न संख्या ६५३ के उत्तर में बताई गई थी ।

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, पिछले प्रश्न का उत्तर देते हुए माननीय मन्त्री जी ने बताया था कि उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने पर्वतीय क्षेत्रों के लिए एक योजना प्रस्तुत की है । मैं यह जानना चाहता हूं कि उसके बारे में क्या निर्णय किया गया है ।

डा० राम सुभग सिंह : हम लोगों ने कोशिश की थी कि उत्तर प्रदेश पर्वतीय क्षेत्र में कलसी नामक स्थान पर जो पशुओं का फ़ार्म है, उसको भारत सरकार ले ले और वहां पर जरसी जानवरों के लिए एक केन्द्र खोला जाये । लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार ने सोचा कि वही उसको चलाती रहे । इसलिए हिमाचल प्रदेश में कटौला में और मैसूर में बंगलौर के पास स्थित हजरघाटा में जरसी जानवरों के दो केन्द्र स्थापित किये गए हैं । लेकिन अगर उत्तर प्रदेश सरकार चाहेगी, तो हम कलसी फार्म को भी मदद देंगे ।

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, अभी हाल ही में शिमला में पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के सम्बन्ध में जो गोष्टी हुई थी, उसमें फलों और पशुओं के केन्द्र स्थापित करने के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव रखे गए थे । मैं यह जानना चाहता हूं कि उन सुझावों पर क्या अमल किया गया है और क्या उन के कारण इस कार्यक्रम में और प्रगति की जा रही है ?

डा० राम सुभग सिंह : हमारी एक फील्ड कैटल डेवेलपमेंट स्कीम है, जिस के अन्तर्गत आसाम, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू-काश्मीर और पंजाब के पहाड़ी हल्कों में मदद देने का विचार है और इसके केन्द्र भी स्थापित किये गए हैं । पंजाब में पालमपुर में और आसाम में गोहाटी के पास, और दूसरी

जगहों में भी, ऐसे केन्द्र स्थापित करने पर विचार किया जायगा । हिमाचल प्रदेश के किनौर ज़िले में याक, जरसी और दूसरे कैटल के क्रासब्रीड्सज़ तैयार करने के लिए दो केन्द्र खोले जायेंगे ।

श्री भागवत झा आजाद : क्या मैं जान सकता हूं कि इन पर्वतीय क्षेत्रों में पशुओं और फलों के फार्मों में जो उत्पादन हुआ है, वह उन पर व्यय की जाने वाली धनराशि के अनुरूप है, या अभी तक खर्च अधिक हो रहा है और पशुओं का विकास तथा फलों का उत्पादन कम हो रहा है ?

डा० राम सुभग सिंह : अगर अकेले हिमाचल प्रदेश को लिया जाये, तो पहले वहां पर एक लाख मन प्रतिवर्ष के करीब सेब होते थे, जबकि अब उनकी मात्रा करीब ढाई लाख मन प्रतिवर्ष हो गई है । इसी प्रकार उत्तर प्रदेश और कुल्लू वैली में भी फलों का उत्पादन बढ़ा है और हम लोग जानवरों के सम्बन्ध में भी प्रगति करने की कोशिश कर रहे हैं ।

Shri Sham Lal Saraf: May I know up to what altitude these experiments are taking place? Is it only up to the snow line or beyond? If it is beyond the snow line, I want to know the names of the places.

Dr. Ram Subhag Singh: It is usually at an altitude up to 8,000 feet for jersey and yak it is between 8,000 and 10,000 feet, and for fruits also up to about 10,000 feet. For vegetables and animals there is one farm at Murtse near Leh, which has an elevation of about 11,500 feet.

Shrimati Akkamma Devi: In view of the fact that there are large quantities of different kinds of fruits in the hilly areas only during particular seasons of the year, may I know whether Government will set up more factories in these hilly areas for preservation of these fruits?

Dr. Ram Subhag Singh: It is included in our programme, and we shall do our best to set up fruit judice extraction factories at suitable centres, and mostly near the fruit producing centres.

Shri K. C. Pant: The hon. Minister said that jersey bulls were being distributed to a large number of hill areas. May I know the criterion on which they are distributed, and in how many years this will have a palpable impact on the cattle breeds of these areas?

Dr. Ram Subhag Singh: Actually this scheme was announced only last year and 50 jersey cattle were sent to Kataula in Himachal Pradesh and 50 to Bangalore, and the number of bulls will increase now because as it was started only last year, only 10 have been distributed, and of these ten bulls, three have been sent to Assam, two to Punjab, one to Himachal Pradesh, two to U.P. and one to Jammu and Kashmir.

श्रीमती सावित्री निगम : क्या मैं जान सकती हूं कि पर्वतीय क्षेत्रों में जो सरकारी रूप से फ़ार्म बनाने और पशु-पालन की व्यवस्था की गई है, उसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से फलों के फ़ार्म और पशु-पालन के फ़ार्म बनाने वालों तथा फ्रूट-प्रिज़र्वेशन के केन्द्र खोलने वालों को क्या सरकारी अनुदान, सहायता और सुविधायें मिलती हैं ?

डा० राम सुभग सिंह : पर्वतीय इलाकों में ज्यादातर विकास किसानों के व्यक्तिगत बाहु-बल से अभी तक हुआ है । जो किसान फलों का बाग़ लगाना चाहते हैं, उनको पंजाब के ग़ैर-सरकारी इलाकों से ३०० परसेंट ज्यादा सिंचाई की सुविधा दी जाती है । और फिरोज़पुर जिले में इसकी बदौलत तीस हजार एकड़ में माल्टा के बाग लग गए हैं और अंगूरों के भी लग रहे हैं । पहाड़ी इलाकों में नकद रुपये दिये जाते हैं पांच सौ प्रति एकड़ के हिसाब से । इस तरह से हिमाचल प्रदेश में अलग रेट है, उत्तर प्रदेश में और जम्मू काश्मीर में भी

अलग रेट हैं । इस चीज़ के लिए हम लोग और ज्यादा कोशिश करेंगे कि बढ़े ।

Home Science Colleges in Agricultural Universities

\+

*992. Shri Yashpal Singh:
Shri Sidheshwar Prasad:
Shri Ram Harkh Yadav:
Shri Rameshwar Tantia:

Will the Minister of **Food and Agriculture** be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Union Government have accepted the recommendations of Indo-American Joint Team on Agricultural Education about the Home Science Colleges;

(b) if so, whether the State Governments have been asked to establish Home Science Colleges; and

(c) the reaction of the State Governments thereto?

The Minister of State in the Ministry of Food and Agriculture (Dr. Ram Subhag Singh): (a) to (c). A statement giving the information required is laid on the Table of the Sabha.

STATEMENT

(a) and (b). The Second Joint Indo-American Team made a recommendation that a Home Science College should be a Constituent College of Agricultural Universities. The Government of India have accepted this recommendation and commended it to the State Governments with the remarks that Home Science Colleges should also be established in the States where Agricultural Universities were not likely to be established in the near future in close proximity of Colleges of Agriculture and assistance and encouragement should also be given to introduce agriculture as an elective in the Home Science Curricula.

(c) The reaction of the State Governments to this recommendation is not yet available. There are however, Home Science Colleges in many of the States. As regards establishment of Home Science Colleges as constituents of Agricultural Universities, necessary action is being taken by the States where these Universities have been established or are being established.

श्री यशपाल सिंह : मैं जानना चाहता हूं कि इस साल में यानी १९६३ में आप कितने और कालेज शुरू करने जा रहे हैं ?

डा० राम सुभग सिंह : ऐसे कालेज २२ हैं अपने देश के विभिन्न स्थानों में ।

श्री यशपाल सिंह : कृषि के अलावा और जनरल यूनिवरसिटीज़ में इस कोर्स को शुरू करने में क्या दिक्कत है ?

डा० राम सुभग सिंह : दिक्कत कुछ नहीं है । जो पांच सबजैक्ट चुने गए हैं कि कृषि शिक्षा के सम्बन्ध के हों कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए, उन पांच में एक होम साइंस है ।

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : जो विवरण सभा पटल पर रखा गया है, उससे स्पष्ट नहीं होता है कि एग्रीकल्चर कालेजिज़ में होम साइंस को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है । क्या माननीय मन्त्री जी इस पर प्रकाश डालने की कृपा करेंगे ?

डा० राम सुभग सिंह : होम साइंस यानी गृह विज्ञान कृषि के लिए बड़े महत्व की चीज है क्योंकि जो भी कृषि का काम होता है उसका बहुत कुछ हिस्सा घर से प्रभावित होता है । अगर दूध घर में रहे तो घी वगैरह बनाने का सारा काम महिलाओं का होता है । इसी तरह से अनाज के प्रोसेसिंग का भी काम है । बगैर इसके काम चलेगा नहीं ।

Dr. P. S. Deshmukh: How many agricultural universities have started functioning and what is the assistance the Central Government has given and how many more universities are likely to be started in the course of the Third Plan?